पत्रकारिता को खंगालने की पहल

शशि पांडे 'चैतन्य'

आज ऐसे पत्रकारों की कमी नहीं जो पुरा स्टाप और कौम तक की कीमत वसूलने की कोशिश करते हैं किंतु ऐसे भी पत्रकार हैं जो भूख तथा जरूरतों की भट्टी में जलते हुए भी उसूलों से समझौता नहीं करते। खैर! अब पुलिस तथा वकील की श्रेणी में पत्रकारों की गणना होने लगी है जिनसे हर कोई बचना चाहता है। ऐसे समय में जाने-माने पत्रकार आलोक मेहता की पुस्तक 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' से काफी उम्मीदें बंधती हैं। इसमें पत्रकारिता की खामियों की नब्ज टटोलते हुए पूरी पत्रकारिता को खंगालने की कोशिश की गई है।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर टिप्पणी करते-करते श्री मेहता पत्रकारिता पर भी तीखी (किंतु वाजिब) टिप्पणी करते प्रतीत होते हैं, इस पुस्तक में। सम्पादक पद की घटती गरिमा, पत्रकारों द्वारा तबादला उद्योग से जुड़ने, गैर जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग, करोड़पति होते पत्रकारों, पत्रकारिता की चुनौतियों, अखबारों के बदलते चेहरे, सम्पादकीय डेस्क, मीडिया में हिन्दी की दुर्दशा, अनुवाद की समस्याओं आदि से सम्बन्धित महीन से महीन बातें श्री मेहता जिस अंदाज से कहते हैं, उससे उनकी छवि एक जागरूक मीडिया पर्यवेक्षक की बनती है।

पत्रकारिता के गिरते मूल्यों से लगता है, आलोक मेहता क्षुब्ध हैं किन्तु उनका यह क्षोभ कुंठा में नहीं बदलता, न ही दोषारोपण का माध्यम बनता है। वे स्वस्थ पत्रकारिता की पक्षधरता करते हैं। तभी तो सम्पादक होते हुए भी वे स्वीकारते हैं कि इस तरह के पतन के लिए सम्पादक भी जिम्मेदार हैं। वे पत्रकारिता के भीतर लोकतांत्रिक मूल्यों के खात्मे को भी अच्छा नहीं मानते। उनका मानना है कि पूर्वाग्रह से बचना ही सर्वोत्तम लक्ष्मण रेखा है।

तमाम सम्पादक/पत्रकार संसद तक पहुंचने के लिए अखबारों का 'इस्तेमाल' करते हैं। सम्पादक बनते ही साहित्यकार बनने की लालक कुलांचे मारने लगती है। एक-दूसरे को नीचा दिखाने में भी सम्पादकों ने अपने जौहर खूब दिखाए हैं। ऐसे भी सम्पादक हैं जो जुगाड़बाजी के जरिए सिक्युरिटी का लाभ उठा रहे हैं। फिर पत्रकारिता का क्या होगा? इस तरह के तमाम ज्वलंत समस्याओं पर श्री मेहता प्रकाश डालते हैं।

श्री मेहता भंडाफोड़ पत्रकारिता को एक हद तक ही सही मानते हैं। लेकिन मसालेदार पत्रकारिता को तो बिलकुल ही सही नहीं मानते। अमरीकी मीडिया का उदाहरण देते हुए वे सामाजिक घटनाओं को अखबारों में प्रमुखता देने पर बल देते हैं। इलेक्ट्रानिक तथा प्रिंट मीडिया को वे एक-दूसरे के लिए खतरा नहीं मानते।

आलोक मेहता पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा की बात कहते हुए पत्रकारिता में गुणवत्ता की वकालत करते हैं। अखबारों की गैर जिम्मेदाराना हरकतों को वे पसंद नहीं करते। राजनीतिक गपशप, अफवाह, सनसनीखेज बातों को प्रमुखता देने के वे पक्षधर नहीं हैं। हिन्दी में अच्छे स्तंभ लेखकों तथा संवाददाताओं की कमी की तरफ भी वे इशारा करते हैं। वे आज की दैनंदिन पत्रकारिता को मात्र एक हड़बड़ी मानते हैं। घटनाओं के सतही विवरण, गैर वाजिब टिप्पणियां करने वालों को 'बौद्धिक बेईमान' कहने से वे नहीं हिचकते। वे संवाददाताओं को पत्रकारिता के गुर सिखाते हैं। यदि संवाददाता तथा मीडिया से जुड़े लोग उनकी इस पुस्तक से थोड़ी भी सीख लें तो न सिर्फ पत्रकारों का अपितु हिन्दी पत्रकारिता को भी एक नई दिशा मिल सकती है।

'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' में 18 अध्याय हैं। इसमें पत्रकारिता के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। ऐसी स्तरीय तथा अच्छी पुस्तक का अंग्रेजी समेत दूसरी भाषाओं में भी अनुवाद की व्यवस्था होनी चाहिए। इस पुस्तक में पत्रकारिता से संबंधित कायदे-कानूनों की भी सरल भाषा में चर्चा की गई है। एडिटर्स गिल्ड की आचार-संहिता तथा अखबारनवीसों, पत्रकारों के अधिकार क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी गई है। ब्रिटेन में पत्रकारिता से संबंधित आचार संहिता की जानकारी देते हुए श्री मेहता ने भारतीय प्रेस परिषद की भूमिका पर भी प्रकाश डाला है। श्री मेहता साफ-साफ लिखते हैं कि प्रेस परिषद दंत विहीन संस्था है। उनकी इस टिप्पणी से यह सवाल भी पैदा होता है कि फिर इस तरह की संस्था का क्या मतलब।

आज के अधिसंख्य पत्रकार 'दलाली' को ही पत्रकारिता की मुख्यधारा मान बैठे हैं। ऐसे में आलोक मेहता पत्रकारिता की चुनौतियों की तरफ भी संकेत करते हैं। पुस्तक की भूमिका 'अपने अनुशासन' में वे अपने निजी अनुभवों को लिपिबद्ध करते हैं। उनके ये निजी अनुभव अन्य पत्रकारों के लिए काफी लाभकर हो सकते हैं। एक बार एक ताकतवर नेता ने उन्हें ट्रक से कुचलवाने की धमकी दी। एक विधायक नेता ने तो उनके खिलाफ दूर-दराज के एक गांव में 25 हजार रु. की डकैती डलवाने तक की प्राथमिकी दर्ज करवा दी। जाहिर है उनके साथ इस तरह की घटनाएं पत्रकारिता के उसूलों पर चलने के कारण हुआ। लेकिन उन्होंने हर स्थिति का सामना किया।

पत्रकारिता की खराब स्थिति के बावजूद इस पुस्तक में श्री मेहता का नजरिया कहीं भी निराशाजनक नहीं दिखता। यही कारण है कि हिन्दी पत्रकारों की हीन भावना को वे ठीक नहीं मानते क्योंकि हिन्दी के तमाम ऐसे अखबार हैं जिनके 15-20 संस्करण निकल रहे हैं। वे हिन्दी पत्रकारों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि उनका कार्य इतने व्यापक स्तर तक जाता है, इसलिए उन्हें हिन्दी का पत्रकार होने पर गर्व करना चाहिए। निश्चय ही श्री मेहता की यह अनुभवपरक पुस्तक पत्रकारिता में अच्छी पुस्तकों की कमी को पूरा करेगी। पुस्तक की छपाई साफ-सुथरी तथा आकर्षक है।

पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा : आलोक मेहता, सामयिक प्रकाशन, 3320-21 जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 160, मूल्य - 150 रु.।